चिश्तियाँ सम्प्रदाय

दो नाम आता है, इसके संस्थापक में कुछ – पुस्तकों में कुछ एक नाम कुछ का नाम रहता है।

- ख्वाजा अबू अब्दाल चिश्ती
- ख्वाजा अबू इस्हाक सामी चिश्ती

भारत में ⇒ चिश्ती सिलसिला का संस्थापक थे।

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (1141–1230)

जन्म – 1141 ई० को अफगानिस्तान (सिस्तान)

मृत्यु – 1230/1236 ई० राजस्थान (अजमेर)

इनका खानकाह (दरगाह-अजमेर) बना हुआ

or उत्तराधिकारी

प्रमुख शिष्य –
1. शेख हमीदुद्दीन नागौरी
2. कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (इनके नाम ऐबक ने कुतुबमीनार बनाया था)

⇒ 1192 में → मु० गौरी के साथ भारत में आए थे

⇒ अजमेर उस समय पृथ्वी राज चौहान के अधीन था।

⇒ उनकी दरगाह अजमेर में स्थित है और ख्वाजा साहब के नाम से प्रसिद्ध है।

⇒ मुगल सम्राट – अकबर ने इस दरगाह की 2 बार (पैदल यात्रा की)

⇒ ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (1186–123…)

⇒ जन्म स्थल – 1186 ई० फरगाना में

मृत्यु – दिल्ली – (कुतुबमीनार की बनाया गया – दिल्ली)

प्रमुख शिष्य
1. शेख बद्रुद्दीन गजनवी
2. शेख फरीद or बाबा फरीद

थे नाम भी था – शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शंकर

Date ....
Page ....

शेख फरीद के नाम चिश्तियों सम्प्रदाय को बहुत ज्यादा लोकप्रियता मिली

⇒ महत्वपूर्ण योगदान – रचनाओं से संबंधित था। बाबा फरीद सिख लोग बोलते थे। इनका वर्णन गुरु ग्रंथ साहिब में मिलता है।

⇒ शेख हमीउद्दीन नागौरी :– राजस्थान के नागौर में इनका जन्म हुआ था। मुइनुद्दीन चिश्ती ने इन्हें (सुल्तान तारकिन) की उपाधि ..

↓

सन्यासियों का सुल्तान

बाबा फरीद जन्म – मुल्तान में हुआ था।
मृत्यु – पाकपटन में
वृद्धावस्था में तीन (3) विवाह किये – जिसमें से एक बलबन की पुत्री थी। हुसैरा

⇒ गुरु नानक भी बाबा फरीद से प्रभावित थे। इसी कारण गुरु अर्जुन देव ने गुरु ग्रंथ साहब (आदिग्रंथ) में उसमें इसका चर्चा किया।

शिष्य –
⇒ निजामुद्दीन औलिया थे।
↓
Next day

⇒ निजामुद्दीन औलिया :– शेख निजामुद्दीन औलिया
बदायूं जन्म – (1236–1325) दिल्ली मृत्यु
ग्यासुद्दीन तुगलक MBT के समकालीन थे। अपनी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु दिल्ली को ही बनाया। (हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल) (सामाजिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य)

Scanned with CamScanner

लोकप्रिया से भयभीत होकर दिल्ली छोड़ने का आदेश
दे दिया (बंगाल) अभियान के दौरान सन्देश भेजा था...
ग्यासुद्दीन तुगलक का, निजामुद्दीन औलिया
का मतभेद था, उसने कहा था, जिस दिन
मैं दिल्ली आऊँगा मारूँगा... इस पर
औलिया... "हुजूर दिल्ली अभी दूर
है।"

प्रमुख शिष्य :- अमीर खुसरो, सिराजुद्दीन उस्मानी,
शेख बुरहानुद्दीन गरीब, नसीरुद्दीन
चिराग-ए-दिल्ली

⊖ निजामुद्दीन औलिया मात्र एक संत थे जो अविवाहित थे। [07] सुल्तानों का काल देखा

किसी सुल्तान के दरबार में नहीं गये

सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी } बहुत प्रयास किया मिलने का, पेन्तु औलिया नहीं मिले।

⊖ उन्हें - महबूब-ए-इलाही (ईश्वर का प्रिय),
सुल्तान-उल-औलिया (संतों का राजा)

योगी सिद्ध → की उपाधि प्राप्त था

⊖ औलिया का प्रिय शिष्य अमीर खुसरो था।
उसकी मृत्यु के दूसरे दिन के उपरांत ही खुसरो
ने अपने प्राण त्याग दिये।

शेख सिराजुद्दीन उस्मानी :-

निजामुद्दीन औलिया ने इन्हें आइना-ए-हिंद
और भारत दर्पण की उपाधि दी थी

Date ....
Page ....

उपनाम – अखिसराज or (सिराज भाई)

⊜ शेख बुरहानुद्दीन गरीब ⇒ (खानकाह ⇓ दौलताबाद) जहाँ रहकर संप्रदाय का प्रचार-प्रसार

⊛ द० भारत में चिश्तियाँ संप्रदाय के प्रवर्तक
⇓
शाजी रूमी → (बीजापुर) – खानकाह था।

⊠ शेख नासिरुद्दीन चिराग देहलवी

⊜ औलिया ने इन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। उत्तर भारत के अंतिम महान चिश्ती संत थे।

MBT ⟹ मृत्यु के बाद फिरोजशाह तुगलक शासक बनने के समय ...... देहलवी मौजूद थे, इनसे अच्छे संबंध थे।

⊜ ख्वाजा सैयद मु० (गेसूदराज) – इनके गुरु नासिरुद्दीन चिराग देहलवी थे।

बहमनी साम्राज्य की स्थापना के बाद कर्नाटक के (गुलबर्गा) को अपनी शिक्षा का केन्द्र बनाया।

⊜ उपनाम :- बंदानवाज ⇒ दुखियों एवं दरिद्रों के प्रति प्रेम तथा मानव अधिकारों की रक्षा करने के कारण इन्हें कहा गया।

Scanned with CamScanner

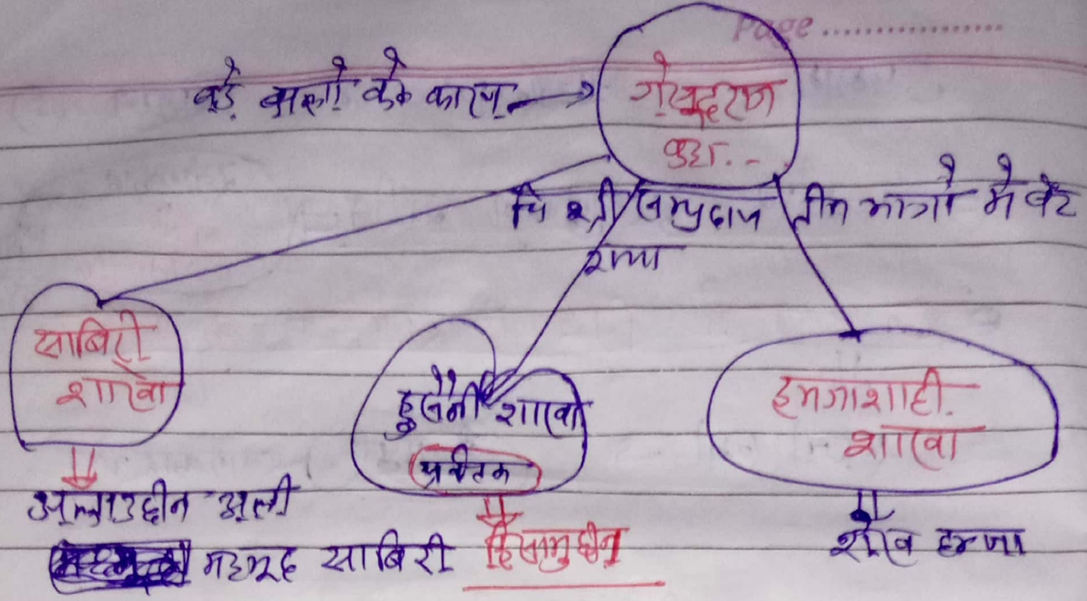

→ शेख सलीम चिश्ती = इनके आशीर्वाद से जहाँगीर (बचपन नाम सलीम (शेख के)) ← अकबर को पुत्र प्राप्ति

ये चिश्तियाँ शाखा के अंतिम उल्लेखनीय संत थे। वे बहुत समय तक अरब में रहे। वहाँ उन्हें शेख अल-हिंद की उपाधि प्रदान की गई।

इसके बाद भारत आये तथा आगरा सिकरी में अपना खानकाह स्थापित किया।

24 बार मक्का की यात्रा की थी

अकबर के समकालीन थे।

② शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही

ये ~~चिश्ती~~ चिश्ती के साबिरी शाखा से संबंधित थे।

उपाधि :- अलख या अलखदास

③ पुस्तक ⇒ रुश्दनामा → अलख निरंजन

⇓

अलख और अगोचर की प्राप्ति से मोक्ष की प्राप्ति.

Date ....
Page ....

(E) अलख के उपनाम से कई कविताएँ भी लिखते थे।

(F) शेख निजामुद्दीन फारुखी
⇓
इन्होंने जहाँगीर के पुत्र (खुसरो) को आशीर्वाद दिया था।
इस कारण जहाँगीर ने शेख निजामुद्दीन फारुखी
को राज्य से निष्कासित कर दिया था

☞ कलीमुल्लाह जहानाबादी
⇓
औरंगजेब के शासनकाल में चिश्ती संप्रदाय
⇓
शिया — हिन्दु — सुन्नी
मिलजुलकर रहना चाहिये।